

गेहूं मध्य पूर्व के क्षेत्र से आई एक घास है जिसकी खेती दुनिया भर में की जाती है। विश्व भर में, भोजन के लिए उगाई जाने वाली धान्य फसलों में मक्का के बाद गेहूं दूसरी सबसे ज्यादा उगाई जाने वाले फसल है, धान का स्थान गेहूं के ठीक बाद तीसरे स्थान पर आता है। गेहूं के दाने और दानों को पीस कर प्राप्त हुआ आटा रोट्टी, डबलरोट्टी (ब्रेड), कुकीज, केक, दलिया, पास्ता, रस, सिवई, नूडल्स आदि बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। गेहूं का किण्वन कर बियर, शराब, वोड्का और जैवईंधन बनाया जाता है। गेहूं की एक सीमित मात्रा में पशुओं के चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है और इसके भूसे को पशुओं के चारे या छत/छप्पर के लिए निर्माण सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि दुनिया भर में आहार प्रोटीन और खाद्य आपूर्ति का अधिकांश गेहूं द्वारा पूरा किया जाता है। भारत में गेहूं एक मुख्य फसल है। गेहूं का लगभग 97% क्षेत्र सिंचित है। गेहूं का प्रयोग मनुष्य अपने जीवनयापन हेतु मुख्यतः

रोटी के रूप में प्रयोग करते हैं, जिसमें प्रोटीन प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। भारत में पंजाब, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश मुख्य फसल उत्पादक क्षेत्र हैं। महत्व गेहूँ (ट्रिटिकम जाति) विश्वव्यापी महत्व की फसल है। यह फसल नानाविध वातावरणों में उगाई जाती है। यह लाखों लोगों का मुख्य खाद्य है। विश्व में कुल कृष्य भूमि के लगभग छठे भाग पर गेहूँ की खेती की जाती है यद्यपि एशिया में मुख्य रूप से धान की खेती की जाती है, तो भी गेहूँ विश्व के सभी प्रायद्वीपों में उगाया जाता है। यह विश्व की बढ़ती जनसंख्या के लिए लगभग 20 प्रतिशत आहार कैलोरी की पूर्ति करता है। वर्ष 2007-08 में विश्वव्यापी गेहूँ उत्पादन 62.22 करोड़ टन तक पहुँच गया था। चीन के बाद भारत गेहूँ दूसरा विशालतम उत्पादक है। गेहूँ खाद्यान्न फसलों के बीच विशिष्ट स्थान रखता है। कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन गेहूँ के दो मुख्य घटक हैं। गेहूँ में औसतन 11-12 प्रतिशत प्रोटीन होता है। गेहूँ मुख्यतः विश्व के दो मौसमों, यानी शीत एवं वसंत

ऋतुओं में उगाया जाता है। शीतकालीन गेहूँ ठंडे देशों, जैसे यूरोप, सं. रा. अमेरिका, आस्ट्रेलिया, रूस राज्य संघ आदि में उगाया जाता है जबकि वसंतकालीन गेहूँ एशिया एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के एक हिस्से में उगाया जाता है। वसंतकालीन गेहूँ 120-130 दिनों में परिपक्व हो जाता है जबकि शीतकालीन गेहूँ पकने के लिए 240-300 दिन लेता है। इस कारण शीतकालीन गेहूँ की उत्पादकता वसंतकालीन गेहूँ की तुलना में अधिक हाती है। गुणवत्ता को ध्यान में रखकर गेहूँ को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है: मृदु गेहूँ एवं कठोर गेहूँ। ट्रिटिकम ऐस्टिवम (रोटी गेहूँ) मृदु गेहूँ होता है और ट्रिटिकम ड्यूरम कठोर गेहूँ होता है। भारत में मुख्य रूप से ट्रिटिकम की तीन जातियों जैसे ऐस्टिवम, ड्यूरम एवं डाइकोकम की खेती की जाती है। इन जातियों द्वारा सन्निकट सस्यगत कशेत्र क्रमशः 15, 4 एवं 1 प्रतिशत है। ट्रिटिकम ऐस्टिवम की खेती देश के सभी क्षेत्रों में की जाती है जबकि ड्यूरम की खेती पंजाब एवं मध्य भारत में और

डाइकोकम की खेती कर्नाटक में की जाती है। गेहूँ से निर्मित विभिन्न उत्पाद अच्छी फसल लेने के लिए गेहूँ की किस्मों का सही चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है। विभिन्न अनुकूल क्षेत्रों में समय पर, तथा प्रतिकूल जलवायु, व भूमि की परिस्थितियों में, पक कर तैयार होने वाली, अधिक उपज देने वाली व प्रकाशन प्रभावहीन किस्में उपलब्ध हैं। उनमें से अनेक रतुआरोधी हैं। यद्यपि 'कल्याण सोना' लगातार रोग ग्रहणशील बनता चला जा रहा है, लेकिन तब भी समय पर बुआई और सूखे वाले क्षेत्रों में जहां कि रतुआ नहीं लगता, अच्छी प्रकार उगाया जाता है। अब 'सोनालिका' आमतौर पर रतुआ से मुक्त है और उन सभी क्षेत्रों के लिए उपयोगी है, जहां किसान अल्पकालिक (अगोती) किस्म उगाना पसन्द करते हैं। द्विगुणी बौनी किस्म 'अर्जुन' सभी रतुओं की रोधी है और मध्यम उपजाऊ भूमि की परिस्थितियों में समय पर बुआई के लिए अत्यन्त उपयोगी है, परन्तु करनल बंटा की बीमारी को शीघ्र ग्रहण करने के कारण इसकी

खेती, पहाड़ी पट्टियों पर नहीं की जा सकती। 'जनक' ब्राउन रतुआ रोधी किस्म है। इसे पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल में भी उगाने की सिफारिश की गई है। 'प्रताप' पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के वर्षा वाले क्षेत्रों में मध्यम उपजाऊ भूमि की परिस्थितियों में अच्छी प्रकार उगाया जाता है। 'शेरा' ने मध्य भारत व कोटा और राजस्थान के उदयपुर मंडल में पिछेती, अधिक उपजाऊ भूमि की परिस्थितियों में, उपज का अच्छा प्रदर्शन किया है। 'राज 911' मध्य प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र और दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में सामान्य बुआई व सिंचित और अच्छी उपजाऊ भूमि की परिस्थिति में उगाना उचित है। 'मालविका बसन्ती' बौनी किस्म महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश की अच्छी सिंचाई व उपजाऊ भूमि की परिस्थितियों के लिए अच्छी है। 'यू पी 215' महाराष्ट्र और दिल्ली में उगाई जा रही है। 'मोती' भी लगातार प्रचलन में आ रही है। यद्यपि दूसरे स्थानों पर इसको

भुलाया जा रहा है। पिछले कई वर्षों से 'डबल्यू जी-357' ने बहुत बड़े क्षेत्र में कल्याण सोना व पी वी-18 का स्थान ले लिया है। भिन्न-भिन्न राज्यों में अपनी महत्वपूर्ण स्थानीय किस्में भी उपलब्ध हैं। अच्छी किस्मों की अब कमी नहीं हैं। किसान अपने अनुभव के आधार पर, स्थानीय प्रसार कार्यकर्ता की सहायता से, अच्छी व अधिक पैदावार वाली किस्में चुन लेता है। अच्छी पैदावार के लिए अच्छे बीज की आवश्यकता होती है और इस बारे में किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता। भूमि का चुनाव: गेहूं की अच्छी पैदावार के लिए मटियार दुमट भूमि सबसे अच्छी रहती है, किन्तु यदि पौधों को सन्तुलित मात्रा में खुराक देने वाली पर्याप्त खाद दी जाए व सिंचाई आदि की व्यवस्था अच्छी हो तो हलकी भूमि से भी पैदावार ली जा सकती है। क्षारीय एवं खारी भूमि गेहूं की खेती के लिए अच्छी नहीं होती है। जिस भूमि में पानी भर जाता हो, वहां भी गेहूं की खेती नहीं करनी चाहिए।

बीजों का चयन व बोआई बीजों का चयन जलवायु, बोने के समय व क्षेत्रफल के हिसाब से करना चाहिए. सरकारी उपकेंद्रों व बाजारों में गेहूं के कई तरह की प्रजाति वाले बीज मिलते हैं. सौ फीसदी शुद्ध बीज को उत्तम बीज कहा जाता है. हर सूरत में प्रमाणित बीज का ही किसानों को इस्तेमाल करना चाहिए. इस से बेहतर उत्पादन प्राप्त होता है. आमतौर पर 4 तरह के बीज होते हैं, जो प्रजनन बीज, आधारीय बीज, प्रमाणित बीज व सत्यापित बीज कहलाते हैं. हाइब्रिड बीज भी उपलब्ध होते हैं. गुणों का विकास कर के तैयार किए गए बीजों को हाइब्रिड बीज कहा जाता है. कृषि वैज्ञानिकों की राय में समय के मुताबिक बीजों की किस्मों का चुनाव किया जाना चाहिए.

अलगअलग राज्यों में दर्जनों किस्में होती हैं. सिंचित अगेती खेती का समय 15 अक्टूबर से 25 नवंबर तक माना जाता है. अगेती बोआई के लिए बाजार में जो बीज की किस्में मिलती हैं, उन में एचडी 2329, एचडी

2428, एचडी 2204, पीबीडब्ल्यू 550, एचडी 2733, एचडी 2851, एचडी 2894, सीपीएएन 3004, डब्ल्यू एच 1105, यूपी 2338, डब्ल्यूएच 542, पीबीडब्ल्यू 343 व एचडी 2687 वगैरह शामिल हैं. पछेती बोआई का समय 25 नवंबर से 25 दिसंबर तक माना जाता है. इस के लिए यूपी 2425 व 3338, पीबीडब्ल्यू 373, राज 3765, पीबीडब्ल्यू 226, एचडी 2967, एचडी 2270, डब्ल्यूएच 291, एचडी 2932, पीबीडब्ल्यू 711 वगैरह बीजों की किस्में अच्छी होती हैं. कृषि वैज्ञानिक कहते हैं कि बीजों का चयन महत्वपूर्ण कड़ी है. उन की गुणवत्ता पर यदि शक हो, तो सरकारी जांच केंद्रों पर उन की जांच कराई जा सकती है. बीज खरीदते समय किसानों को रसीद भी जरूर हासिल कर लेनी चाहिए. अगेती बोआई के लिए 100 किलोग्राम व पछेती बोआई के लिए 110 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर के हिसाब से लेने चाहिए. अच्छी पैदावार के तरीके के तौर पर बीजों को 5 से 6 सेंटीमीटर नीचे बोया जाना चाहिए और लाइन से लाइन की दूरी 23 सेंटीमीटर व



बीज से बीज की दूरी 18 सेंटीमीटर होनी चाहिए. हल या ट्रैक्टर चालित मशीन के जरीए बोआई करने के बाद बीजों को ढक देना चाहिए. कई बार किसान छिड़काव, हल के पीछे कूंडों में, डिबलर द्वारा, उभरी हुई क्यारी विधि व अन्य विधियों के जरीए भी बीज बोते हैं. वैज्ञानिक छिड़काव के तरीके को अच्छा नहीं मानते. इस से आधे से ज्यादा बीज बेकार हो जाते हैं. बीजशोधन बेहतर फसल के लिए बीजों को शोधित कर के बोआई करनी चाहिए. 2.5 ग्राम थीरम या 2.5 ग्राम कार्बेन्डाजिम या 5 ग्राम ट्राईकोडरमा स्पोर से प्रति किलोग्राम बीज को शोधित करना चाहिए. शोधन से जोरदार जमाव होता है और तमाम रोगों से बचाव होता है. इस के जरीए मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारियां भी कम हो जाती हैं. जैविक उर्वरक का इस्तेमाल किसानों को जैविक उर्वरक ही इस्तेमाल करने चाहिए. कैलजोटो (एजोटोबैक्टर या एजोस्पेलियम) आधा लीटर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से इस्तेमाल किया जाना चाहिए. यह नाइट्रोजन की

पूर्ति करता है. कैल्फोरस (पीएसबी कल्चर) जोकि फास्फोरस की पूर्ति करता है, उसे 1 लीटर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से इस्तेमाल करें. पोटेश की पूर्ति के लिए कैल्टास (फ्रेट्यूरिमा ओरेंसिया) आधा लीटर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से इस्तेमाल करना चाहिए. यदि रासायनिक उर्वरक का इस्तेमाल सीडड्रिल मशीन द्वारा किया जाता है, तो उस में 80 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम पोटेश व 40 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हेक्टेयर के हिसाब से बोआई के साथ ही डाल देना चाहिए. यूरिया को 2 भागों में बांट लेना चाहिए. इस में से 1 भाग दूसरी सिंचाई से पहले व दूसरा भाग चौथी सिंचाई से पहले देना चाहिए. यह भी ध्यान रखने वाली बात है कि जैविक या रासायनिक उर्वरकों में से किसी एक का ही इस्तेमाल करना चाहिए, वरना फसल को नुकसान हो सकता है.

